ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL**04292**
RNI REG. NO. UPBIL/**2014/66218** **PP. No.- 107-109**

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e–I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-20, No.- II, Issues-40, YEAR- April-June 2026

बिहार में बापू के रचनात्मक कार्यों में प्रभावती देवी की सहभागिता

डॉ0 सत्यनारायण प्रसाद

एम0ए0, पी–एच0डी0 व नेट, ग्राम+पो– नरसन्डा, थाना– चन्डी, जिला– नालन्दा (बिहार) भारत

Received-10.04.2026, Revised-18.04.2026, Accepted-25.05.2026, **E-mail:satyanarayanprasad278@gmail.com**

सारांशः बिहार की महिलायें जिसे भारतवर्ष में पिछड़ी महिला के नाम से जाना जाता था। ये महिलायें भी गाँधी के निर्देशानुसार घर की चार दिवारी से निकलकर उन्मुक्त हवा में साँस ली। गाँधी के सभी कार्यक्रमों में बिहार की महिलाओं ने काफी बढ़–चढ़ कर हिस्सा लिया तथा ईमानदारीपूर्वक अपने कार्यों का निर्वहन किया। इस समय बिहार के महिलाओं के कंधे पर चार महत्त्वपूर्ण कार्य थेः पहला तो किस प्रकार और कैसे स्वतंत्रता आंदोलन के आधार स्तंभ को मजबूत किया जाए। दूसरा भारतीय सामाजिक व्यवस्था में फैली हुई अमानवीय कुप्रथा को समाप्त किया जाए तथा तीसरा आंदोलन के स्थगित होने पर चरणात्मक कार्यक्रम किस तरह चलाया जाए, चौथी घर में अपने बच्चे, बूढ़े एवं परिवार की अन्य जिम्मेवारियों का निर्वहन करते हुए सामाजिक, सांस्कृतिक एवं राजनैतिक स्तर पर रचनात्मक कार्यों के लिए अपने को उपर्युक्त बना पाना एवं उसके लिए यथोचित समय निकाल पाना। इन सभी कार्यों में बिहार के महिलाओं ने महत्वपूर्ण योगदान दिया। योगदान देने वाली प्रमुख महिलाओं में प्रभावती देवी भी एक है। यहाँ हम प्रभावती देवी की सहभागिता को दर्शा रहे हैं।

कुंजीभूत शब्द–उन्मुक्त हवा, ईमानदारी, निर्वहन, स्वतंत्रता आंदोलन, आधार स्तंभ,सामाजिक व्यवस्था, अमानवीय कुप्रथा, तीसरा आंदोलन।

श्रीमती प्रभावती देवी का जन्म 1906 ईसवी में सारण (सीवान) जिले के श्रीनगर में हुआ था।[1] उनका पालन पोषण अपने योग्य पिता की छत्रछाया में दरभंगा में हुआ था। उनके पिता व्रजकिशोर प्रसाद जी प्रमुख स्वतंत्रता सेनानी थे। वे बहुत ही प्रगतिवादी थे। प्रभावती जी की माता फुलझड़ी देवी एक रूढ़िवादी महिला थी। किन्तु प्रभावती पर पिता का ही संस्कार पड़ा।[2] बचपन से ही ये निर्भय होकर विचार करती। अपने पिता के साथ सभाओं में शरीक होती तथा समाज की समस्याओं पर चर्चा सुनती रहती।[3]

उनकी शिक्षा दिक्षा घर में ही हुई, पिता के मार्गदर्शन में उनकी पढ़ाई चलती रही। सीता और सावित्री की जीवनियाँ, भारत का गौरवपूर्ण इतिहास, संसार की श्रेष्ठ देवियों का इतिहास तथा कुछ दर्शन आदि इन्हें पढ़ाये गये। साथ ही सादगी की विरासत मिली स्वनामधन्य पूज्य व्रजकिशोर बाबू जैसे पिता से।

1917 में गाँधीजी को चम्पारण लाने में प्रमुख भूमिका ब्रजकिशोर बाबू की थी। उन्हीं दिनों की बात है गाँधीजी व्रजकिशोर बाबू के घर पर ठहरे थे। प्रभा को देखते ही वे बोले– "यह मेरी बेटी है इसे मेरे साथ भेजो।" ब्रज किशोर बाबू तैयार हो गये और प्रभा को बापू को सौंप दिया किंतु उनकी माँ ने इन्कार कर दिया।

1920 में उनका विवाह सिताब दियारा के हरसूदयाल जी के पुत्र जयप्रकाश नारायण से हुआ। इस विवाह में तिलक दहेज लेन देन की कोई बात नहीं थी। 1920 में रूढ़िवादी समाज में प्रभावती दुलहिन बनकर सिताब दियारा आयी लेकिन परदा किये बिना। दुलहिन के लिये आयी डोली लौट गयी। दुलहिन पैदल ही घर पहुँची। ग्रामीण समाज में मानों भूचाल आ गया। लेकिन बाबू हरसूदयाल जी ने सबको समझाया।

1922 में जय प्रकाश बाबू अमेरिका चले गये। कुछ दिनों तक अपने सास–ससुर की सेवा की। वे आश्रम जाना चाहती थी। महात्मा गाँधी उन्हें अपने पास बुलाना चाहते थे। परंतु रूढ़िग्रस्त समाज के समस्त बंधन प्रभा को जकड़े हुये थे। वह विवाहिता युवती थी। पति परदेश गया हुये थे। सास ससुर की सेवा, परिवार की सेवा पुत्रवधु का धर्म था। 1920 के दशक में बिहार का समाज कभी सोच भी नहीं सकता था कि कोई पुत्रबधु इस तरह घर छोड़कर शिक्षा पाने के लिए आश्रम चली जाय फिर वह आश्रम महात्मा गाँधी का ही क्यों न हो और कोटि–कोटि जनों के द्वारा पूजे गये महात्मा स्वयं उसे बुलाये क्यों न हो। प्रभावती अपनी व्यथा पत्रों के माध्यम से गाँधीजी तक पहुँचाती रहती थी। बापू उसे सांत्वना देते और परिवार की अनुमति पाने पर ही आश्रम आने की सलाह देते।[4]

गाँधी की पाठशाला में उनकी पढ़ाई के सिलसिलों का अभिलेख बिहार चर्खा समिति में भरा पड़ा है। कुछ प्रभास्मृति में प्रकाशित भी है।[5]

बापू के साथ जीवन की यात्रा करती हुई प्रभावती बापू के जीवन में जैसे लीन हो गई थी। महात्मा की यात्रा दल में वह अवश्य रही। 1925 में गाँधीजी बिहार के दौरे पर थे उस समय भी प्रभावती जी उनके साथ थी।[6] रेल यात्रा, मोटर यात्रा, बैलगाड़ी और पदयात्रा की अस्त–व्यस्तता में भी यात्री दल का सुव्यवस्थित जीवन चलता रहा। सुबह शाम की प्रार्थना कभी रेल के डिब्बे में होती थी तो कभी प्लेटफर्म पर। 1929 के अप्रैल की आंध्रप्रदेश की यात्रा डायरी हैदराबाद, वैलबाड़ा, सीतानगर में कर्नल, नेल्लूर जैसे आंध्र प्रदेश के प्रमुख शहरों तथा गाँवों में बापू के दर्शन के लिए उमड़ती भीड़ की, बापू के उपर होनेवाली दान की वर्षा की झांकी और उस तुफानी दौर में भी बापू की सारी व्यक्तिगत सेवाओं में रत प्रभावती की झाकी प्रस्तुत करती है। कभी झोपड़ी में निवास, स्नानादि की कोई व्यवस्था नहीं, फिर भी बापू को ठीक समय पर भोजन देना, उनकी हर चीज सुव्यवस्थित ढंग से रखने आदि में कभी कोई कमी नहीं हुई, न कभी उनकी अपनी कताई या अध्ययन में नागा हुआ। प्रवास में भी बापू उन्हें पढ़ाते रहे।[7]

आंध्र प्रदेश दौरे के बाद उत्तर प्रदेश के दौर में भी बापू के साथ घूमती रही। बापू के साथ, भार एवं भारतीय जनता के स्वतंत्रता संग्राम के जीवन के साथ प्रभावती एकरूप बनती जा रही थी। कभी कभार वह बिहार आती, माता–पिता एवं ससुराल वालों से मिलती उनकी सेवा करती पर अपनी प्रार्थना, चरखा, गीता पाठ तथा अध्ययन का क्रम जारी रखा।[8]

प्रभावती का स्वधर्म मूलतः सेवाधर्म था। बापू के पास तथा बाद में भी उसका अध्ययन चलता रहा लेकिन फिर भी उसका जीवन कर्ममय ही रहा। लिखने पढ़ने की अपेक्षा सेवा में उनका अधिक मन लगता था।

गाँधीजी के साथ प्रायः हरेक कॉंग्रेस अधिवेशनों में उन्हें जाने का सुअवसर मिलता रहा। 1929 के अंतिम दिनों में जयप्रकाश अमेरिका से लौटकर आ गये। प्रभावती उन दिनों गाँधीजी के साथ इलाहाबाद में थी। उस समय तक प्रभावती जी नेहरू परिवार से काफी नजदीक होकर परिवार की एक सदस्या बन गई थी। कमलाजी की वह प्रिय सख्ये बनी थी, विजय लक्ष्मीजी, कृष्णाजी, उनकी माता स्वरूप रानी आदि सभी का स्नेह उन्होंने पाया था। जवाहरलाल जी के लाहौर कॉंग्रेस के अध्यक्ष बनने के समाचार से नहेरू परिवार को अत्यंत उल्लास और आनंद में प्रभावती जी भी शामिल थी।[9]

अनुरूपी लेखक / संयुक्त लेखक

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e–I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-20, No.- II, Issues-40, YEAR- April-June 2026

गाँधीजी हरसूदयाल जी तथा ब्रजकिशोर बाबू को पत्र लिखते रहे। किंतु ब्रजकिशोर बाबू चाहते हुये मजबूर थे। ब्रजकिशोर बाबू के नाम गाँधीजी के पत्र को यहाँ अविकल उधृत करना उचित होगा।

भाई ब्रजकिशोर प्रसाद ने प्रभावती देवी को रोक लिया, उससे मुझको कुछ दुख हुआ। हम जो थोड़ें आदमी धर्म और देश की सेवा करना चाहते हैं, उनको सरकार और समाज दोनों का डर छोड़ना होगा। मेरा अभिप्राय है कि चिरंजीवी प्रभावती अच्छी सेविका बन सकती है। होशियार है, उद्यमी है और शीलवती है। सेवा करने की इच्छा है। ऐसी लड़की को जितना उत्तेजना दी जाय, कम है। उनके ससुर से मेरी बात हो गई। उन्होंने कहा "यदि प्रभावती को मैं आश्रम ले जाता तो उनको मंजूर नहीं होता। प्रभावती की सास का स्वास्थ्य अच्छा होने पर प्रभा को आश्रम भेजने के लिए भी वे तैयार है। अब मेरी सलाह है कि प्रभावती को शीघ्रता से आश्रम भेज दिया जाय। सास के लिये जब तक आवश्यकता हो, उनकी सुश्रूषा के लिए रहना चाहिए। आपका,

मोहनदास

अन्तोगत्वा परिवार वालों को प्रणाम कर प्रभावती बापू के पदकमलों के पास साबरमती पहुँची और उनकी साधना का अध्याय प्रारंभ हुआ। उनके जीवन की मुलायम मिट्टी के स्नेहस्पर्स से नया आकार धारण कर रही थी। चार बेटों की माँ कस्तूरबा के जीवन में प्रभा को पाकर बेटी की कमी न रही। 'बा' के प्यार में पली प्रभावती को माँ की दूरी कभी महसूस न हुई। प्रभावती जी बिहार की प्रथम महिला थी जिन्हें गाँधी को सानिध्य प्राप्त हुआ और इतने लम्बे अरसे तक उनके साथ करने का मौका मिला।

आश्रम में प्रभावती का शिक्षण प्रारंभ हुआ। बापू खुद उनके शिक्षक बने। आश्रम में नियमित रूप से प्रार्थना, हर क्षण हिसाब रखने का दिन क्रम, अस्वाद व्रत, सेवाकार्य, श्रमकार्य, कताई, बुनाई, धुनाई, गृहउद्योग, ग्रामोद्योग, रसोई के संग गाँधीजी की व्यक्तिगत सेवा का भी स्वर्णिम अवसर मिला प्रभावती जी को, जिस काम को पाने के लिये बापू के साथियों में अंत तक होड़ सी चलती रही।

1929 में प्रभावती जी ब्रह्मचर्य का व्रत ले चुकी थी। सिताबदियारा से लौटकर पुनः प्रभावती जयप्रकाश जी के साथ आश्रम आई तथा महिलाश्रम में नित्यकार्य में जूट गई। 'बा' के कहने पर जयप्रकाश की सेवा भी की। उन्हीं दिनों की बात है लाहौर काँग्रेस से पूर्व वर्धा में मिटिंग चल रही थी। जयप्रकाश और जवाहरलाल जी का परिचय हुआ। जवाहरलाल जी चाहते थे कि जयप्रकाशजी काँग्रेस के लेबर डिपार्टमेंट में सेक्रेटरी के तौर पर काम करें। बात तय हो गई। 1930 में जयप्रकाश और प्रभावती इलाहाबाद पहुँचे। वहीं इनलोगों ने छोटा घर बसाया ही था कि आंदोलन शुरू हो गया तथा जयप्रकाश जी की माँ बीमार हो गई। सास की सेवा के लिये प्रभावती जी को आना पड़ा और कुछ दिनों तक उनकी सेवा की। किंतु आंदोलन की लगन प्रभावती जी को शीघ्र ही इलाहाबाद खींच लाई। वे कमला जी के साथ काम में जूट गई। कमला जी का स्वास्थ्य उन्हीं दिनों बिगड़ना शुरू हुआ था। लेकिन उन्हें अपनी शरीर की परवाह न थी। देश की आजादी के लिए गाँधीजी के आह्वान पर वे आंदोलन में कूद पड़ी। उन दिनों उनकी प्रियतम सखी और साथ प्रभावती जी ही थी।

3 फरवरी, 1932 की रात, साढ़े सात बजे टंडन जी के मकान पर मीटिंग चल रही थी। उस समय वहाँ पुलिस पहुँची तथा प्रभावती एवं अन्य दस बहनों को गिरफ्तार कर लिया। 8 फरवरी को ट्रायल हुआ और कड़ी सजा हुई। जेल में भी आश्रम जीवन प्रारंभ किया। सुबह शाम प्रार्थना, सफाई, व्यायाम, तकली से सूत काटना, डायरी लिखना आदि। जेल में चन्द्रकांता बहन का सानिध्य प्राप्त हुआ। थोड़े ही दिनों में लखनऊ सेंट्रल जेल भेज दिया गया। वहाँ पर विजया लक्ष्मी एवं कृष्णा आदि का सान्निध्य प्राप्त हुआ।[10]

जेल से छूटते ही वे कमला जी के पास देहरादून गई तथा फिर पूना आई। आंदोलन समाप्त हो गया। प्रभावती अधिकतर बापू के पास रहती थी। बीच–बीच में बिहार आती थी। जयप्रकाश जी रिहा हुये तब परिवार के सामने आर्थिक कठिनाइयाँ थी। फिर भी गाँधीजी ने इशारा किया कि प्रभावती जी को "लड़ाई में हमें अपना सर्वस्व होम करना होगा।" हमें तो यह मार्ग ढूँढ़ना है कि हमारा परिवार किस तरह गरीबी में गुजर–बसर कर सकें।

सत्याग्रह को स्थगित कर बापू ने हरिजन सेवा का काम उठाया था। इसके लिए उनका देशव्यापी दौरा आरंभ हुआ। उनकी सेवा यात्रा उत्कल पहुँची। रात के तीन बजे हजारों की भीड़ आदि फिर गाँधी जी की पैदल यात्रा। प्रभावती जी ने भी इन सारे दुःखों को हँसते–हँसते झेल लिया। पड़ाव पर पानी का अभाव, फिर पानी में भींगना तथा इन सब परिस्थितियों में भी बापू के सभी कार्य सुव्यवस्थित ढंग से पूरा करने की लौह परीक्षा में खड़ी उतरी प्रभावती।

बापू के साथ पूना, बम्बई, अहमदाबाद एवं करॉंची की यात्रा चलती ही रही। कभी फूलों की हारों की वर्षा, तो कभी बम विस्फोट, हर जगह उमड़ती भीड़ में अपने एवं सामान की रक्षा करना। कभी वर्धा आश्रम तो कभी सफर। बापू से मिलने देश के बड़े–बड़े नेता आते रहे, उनकी बातें सुनते हुए अनुभव तथा ज्ञान की वृद्धि होती रही। जयप्रकाश जी का तार आने पर पटना की तैयारी में आखिरी क्षण तक बापू की सेवा।

बापू ने 1934 में बिहार का सघन दौरा किया था। सम्पूर्ण दौरे में प्रभावती जी उनके साथ थी।[11] पुनः आश्रम चल गई। बीच–बीच में पारिवारिक आवश्यकता को देखते हुये जयप्रकाश जी के बुलाने पर बिहार आती। उनकी मनःस्थिति को इस पत्र से समझा जा सकता है। 1935 की बात है। वर्धा आश्रम से प्रभावती जी ने जे.पी. को पत्र लिखा था।

"किशोर लाल भाई और गोमती बहन को जब मैं देखती हूँ तब हमेशा मेरे मन में यह विचार आता है कि ईश्वर हम दोनों के लिए ऐसा शुभ अवसर कब देंगे? हम दोनों साथ रहकर देहात की सेवा करें, इससे बढ़कर आदर्श क्या हो सकता है?

1940 के रामगढ़ काँग्रेस की तैयारियाँ प्रारंभ हो चुकी थी। स्वयं सेविका दल की प्रमुख बनने के लिये प्रभावती जी से आग्रह किया जा रहा था। वे पद से भागती थी, लेकिन राजेन्द्र बाबू दबाव डालते रहे। आखिर बापू का आदेश मानकर उन्होंने यह भार उठाया। बड़ी लगन से प्रभावती जी ने स्वयंसेविकाओं की भर्ती तथा प्रशिक्षण का कार्य किया। बड़ी मुश्किल से कुछ बहने मिली थी जो जीवन में पहली बार विहार से निकली थी। प्रभावती जी ने उन्हें प्रेम और सहानुभूति पूर्वक प्रशिक्षण दिया। प्रभावती जी को ध्यान आया कि अब बिहार की महिलाओं को जगाने का कार्य करना चाहिए तथा रामगढ़ काँग्रेस में स्वयं सेविकाओं की कप्तान प्रभावती जी को देखकर बिहारवासियों की आँखें खुल गई। रामगढ़ काँग्रेस के बाद भी वे स्वयं सेविकाएँ बनाने तथा प्रशिक्षण का कार्य करती रही।[12]

1940 के रामगढ़ काँग्रेस में यह महसूस किया गया कि बिहार में कोई महिला संगठन नहीं है। बापू ने भी इसे महसूस किया तथा प्रभावती देवी को स्त्रियों के बीच संगठनात्मक कार्य करने की प्रेरणा दी। इसी संदर्भ में 20 जून और 25 जून 1940 को इस संबंध में कुछ महिलाओं को संगठित कर एक सभा की गई। प्रभावती जी के अदम्य उत्साह का फल हुआ कि 26 जून, 1940 को पटना में बिहार महिला चर्खा क्लास के नाम से एक संस्था की स्थापना हुई।[13] साहित्य सम्मेलन भवन में दो दिन का वर्ग प्रारंभ किया गया।

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e–I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-20, No.- II, Issues-40, YEAR- April-June 2026

चर्खा क्लास का उद्देश्य था स्त्रियों में चर्खा और खादी का प्रचार करना, गरीब और अशिक्षित स्त्रियों में स्वावलंबन पैदा करना तथा राष्ट्रीय एवं रचनात्मक कार्यक्रमों के लिये बहनों को तैयार करना।

चर्खा क्लास का कार्य प्रारंभ हो गया। चर्खा संघ के माध्यम से कुछ शिक्षिकायें मधुबनी से बुलाई गई। मुहल्ले मुहल्ले में पटना में चर्खा क्लास चलने लगा ताकि घर–घर में स्वराज्य का संदेश पहुँचाया जा सकें।

1941 में गया, हजारीबाग तथा बेतिया जिले में चर्खा क्लास खोले गये। उस समय बिहार में यह अकेली महिला संस्था थी जिसने रचनात्मक कार्यों के जरिये नारी–जागरण का शंख फूँका था। पर्दा एवं अशिक्षा के बोझ से दबी बहनों को चर्खा क्लास के लिये किसी स्थान पर एकत्र करना और वह भी गुलामी के जमाने में, बड़ा ही कठिन कार्य था। फिर भी इसकी कार्य कृतियाँ प्रभावती जी के नेतृत्व में लग्न के साथ जुड़ी रही और कार्य का प्रसार सामाजिक और राजनीतिक बंधनों के बावजूद होता गया और फिर एक दिन वह भी समय आया जब चर्खा क्लास के कार्यों का परिणाम कसौटी पर खरा उतरी। अगस्त, 1942 को वह क्षण अविस्मरणीय है जब मृत्यु और अत्याचार का भय भूलकर चर्खा क्लास द्वारा संगठित दो सौ महिलाओं का जुलूस सेक्रेटेरियट पर तिरंगे फहराने के लिए निकला।

1942 में प्रभावती जी को गिरफ्तार कर भागलपुर जेल में भेज दिया गया। इस बीच अर्थात् 1942 से 1946 तक का कार्यक्रम चला।[14] 1942 में कस्तूरबा गाँधी को गिरफ्तार कर आँगा खाँ महल में रखा गया। इस समय "बा" काफी बीमार पड़ गई थी और बार–बार यह माँग कर रही थी कि ''मैंने प्रभा जाइये''[15] – (मुझे प्रभा चाहिये)। प्रभावती जी की सेवा, साधना और समर्पण का वह अंतिम उपहार था। "बा" की रट को देखते हुए ब्रिटिश सरकार को झुकना पड़ा। कड़ी पुलिस व्यवस्था में प्रभावती जी को पूना लाई गई। वहाँ पहुँचते ही "बा" की सेवा में जूट गई।

22 फरवरी, 1943 को "बा" दुनिया से विदा हो गई। मातृवियोग से विह्वल प्रभावती जी फूट–फूटकर रोने लगी। आँगा खाँ महल में तीन माह रहने के बाद सरकार ने प्रभावतीजी को फिर भागलपुर जेल भेज दिया। गाँधी से इस समय बिछड़ने का दुःख असहय था फिर भी गाँधीजी ने प्रभावती को मंत्र दिया "तुम्हें वीर" बनना है।[16]

1946 में प्रभावती जी स्वयं सेविकाओं को संगठित करती रही।[17] 1946 में प्रभावती जी के नेतृत्व में 'चरखा क्लास की ओर से 18 बहनों के जत्थों में जा–जाकर अस्तपाल में भर्ती किये गये साम्प्रदायिक दंगा पीड़ितों की सेवा सुश्रुषा की। 1947 में गाँधी की शांति यात्रा में चर्खा समिति की महिलाओं ने बापू के साथ गाँव–गाँव का दौरा किया था तथा मार्च 1947 में बापू के समक्ष एक चर्खा यज्ञ में समिति की 150 महिलाओं ने भाग लिया था।[18] इस तरह प्रभावती की बनाई यह चर्खा समिति बिहारी महिलाओं का स्वावलंबन का रास्ता प्रशस्त्र करते मार्गदर्शन करती रही। तीन साल तक लम्बी अवधि तक जेल में रहने के बाद रिहा होने पर बापू के पास पूना चली गई। बीच–बीच में वे पटना आकर महिला चर्खा संघ का दिशा–निर्देशन करती रही तथा गाँधी के अंतिम क्षणों तक भी उनके साथ रही।[19]

गाँधी प्रयाण के बाद महिला चर्खा समिति के माध्यम से नारी जागरण तथा भूदान यज्ञ में लगी रही। कभी किसी पद की ओर नहीं देख स्वातंत्रयोत्तर काल में भी मुख्य रूप से भूदान आंदोलन से लगी रही। 15 अप्रैल 1973 को उनका देहान्त हो गया। स्वतंत्रता आंदोलन एवं गाँधी के रचनात्मक कार्यक्रमों में उनके योगदान को देश एवं बिहार की महिलाएँ कभी नहीं भूला सकतीं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. सहाय, शिवपूजन; बिहार की महिलायें, पृ० 350.
2. प्रभा स्मृति, सर्वसेवा संघ प्रकाशन वाराणसी, पृ० 222.
3. वही, पृ० 221.
4. महात्मा गाँधी का पत्र, उद्धृत प्रभा स्मृति, 224.
5. पूर्वोद्धृत, प्रभा स्मृति, पृ० 227.
6. पूर्वोद्धृत, सहाय, शिव पूजन, पृ० 355.
7. पूर्वोद्धृत, प्रभास्मृति, पृ० 228.
8. वही।
9. वही, पृ० 229.
10. वही, पृ० 232.
11. द इंडियन नेशनल, 6 अप्रैल, 1934.
12. कुमार नागेन्द्र, इंडियन नेशनल मूभमेंट, पृ० 160.
13. महिला चर्खा समिति पत्रिका, रजत जयंती अंक, पृ० 13.
14. पूर्वोद्धृत, प्रभास्मृति, 1967, पृ० 13.
15. वही, पृ० 24.
16. वही, पृ० 24.
17. बिहार सरकार पोलिटिकल स्पेशल, मई, 1946 के पूर्वाद्ध का रिपोर्ट।
18. महिला चर्खा समिति पत्रिका, रजत जयंती अंक, 1967, पृ० 15.
19. पूर्वोद्धृत, प्रभा स्मृति, पृ० 242.

*****